अन्तरा-शब्दशक्ति

अनन्तनाद

(काव्य संग्रह)

श्रीमती रंजना राजीव श्रीवास्तव

अन्तर्नाद

(काव्य संग्रह)

रंजना श्रीवास्तव

अन्तरा- शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

समर्पण

।।असतोमा सदगमय।।
।।तमसोमा ज्योतिर्गमय।।
।।मृत्योर्मा अमृतंगमय।।

मेरे पिता, स्व०श्री राजेश्वरी प्रसाद श्रीवास्तव, के वरदहस्त की छाँव में "**गीली माटी**" के पश्चात मेरा नव काव्य संग्रह "**अन्तर्नाद**" मूर्त रूप ले सका।
अन्तर्नाद- मेरे मन में उठने वाली ध्वनि तरंगें हैं। इस काव्य संग्रह की प्रत्येक ध्वनि प्रतिध्वनि **मेरे पिता को समर्पित** है।

ISBN- "978-93-86666-69-7"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय-१५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- रंजना श्रीवास्तव
मूल्य-६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
ANTARNAAD BY RANJANA SRIVASTAV

वैधानिक चेतावनी-इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

आद्य सौरभ	5
किरीट	7
1. सिसकी	9
2. परिवार की ढाल	10
3. जीना चाहती हूँ	11
4. आत्म साक्षात्कार से आत्मबोध	12
5. जीवनोपयोगी सिद्धांत	13
6. सपनों का नीलाभ पटल	14
7. पाप का घड़ा – कितना बड़ा	15
8. रजोगुण से प्रेरित अभिलाषा	16
9. दर्द का रुदन	17
10. मौन की शक्ति का एहसास	18
11. रख लो न मेरा मान	19
12. हर आँसू सूख गया	20
13. षोडश संस्कार – एक अनिवार्यता	21
14. कस्तूरी की तलाश	22
15. सूनी आँखों में बस गया कौन	23
16. मनोबल दूषित न होने दें	24
17. नववर्ष – नवसंकल्प	25
18. आज सयानी हो गई	26
19. विधि का विधान अटल	27

20. दीपावली – एक पारम्परिक दृष्टिकोण 28
21. आहिस्ता आहिस्ता चल 29
22. सच्चे दिल – सच्चे लोग 30
23. जीवन का गणित 31
24. कैकेयी – एक नयी परिकल्पना 32

आद्य सौरभ

परम पिता परमात्मा ज्योति स्वरूप बिम्ब ही हैं, जो रन्ध्र में स्थित चेतना को संचालित करते हैं। आत्म सरिता में डूबकर, आत्मचिन्तन करने पर, रन्ध्र स्थल पर एक प्रकाशमान बिम्ब उभरता है, जो शून्य की यात्रा का सूत्रपात करता है। अपलक निहारने पर सप्ताश्वरथी, महा तेजस्वी सहस्रांशु का तेज भी, एक गहरी कालिमा सा प्रतीत होता है। उस क्षण, अवचेतन मन शून्य हो जाता है। मानों सम्पूर्ण सृष्टि एक शून्य में सिमट सी गई हो। शून्य ही आदि हो, शून्य ही गन्तव्य हो। शून्य में समाहित होने के लिए शून्य ही उद्देश्य हो।

सृष्टि का अद्भुत सृजन करने वाली अद्वितीय सत्ता, अदृश्य होते हुए भी प्रत्येक अणु को नियंत्रित करती है। सामान्यतः उस अदृश्य सत्ता को प्रत्यक्ष न देख पाने के कारण मानव उसमें विश्वास नहीं कर पाता, किन्तु ज्यों-ज्यों परमपिता परमात्मा की सत्ता में उसे विश्वास होने लगता है, उसे आभास होने लगता है, कि पुष्प की सुगन्ध, पवन की ठंडी लहर, अग्नि का तेज और परम आनन्द, कभी भी देखे नहीं जा सकते हैं, मात्र उनका अनुभव किया जा सकता है तथा उनका आनन्द उठाया जा सकता है। भौतिक जगत में घटित होने वाली हर प्रतिक्रिया, ईश्वर द्वारा कार्यान्वित क्रियाओं की प्रतिच्छाया ही है।

मेरा अन्तर्मन, बचपन से ही घरेलू विषयों की अपेक्षा पौराणिक और आध्यात्मिक विषयों के प्रति पूर्णतः सजग रहा। पढ़ा था, कि.... **अध्यात्म** चेतना के परिष्कार का नाम है। जिनके जीवन में आध्यात्मिक उन्नति होती है, उन्हें सुख नहीं, शान्ति मिलती है, साधन नहीं, सन्तुष्टि मिलती है। बस... इन्हीं विचारों में आकण्ठ डूबती गई। प्रति सप्ताह सुन्दर काण्ड और हनुमान चालीसा के पाठ के साथ-साथ गायत्री शक्तिपीठ के सामूहिक हवन व सत्संग में जाना, यही बचपन से देखा और सीखा। कब ये सब मेरे जीवन का भी एक अंग बन गए, पता ही नहीं चला। नैतिक मूल्य, रुधिर बनकर रगों में बहने लगे। अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ भागवत पुराण, हरिवंश पुराण व उपनिषदों के पाठ ने लौकिक-पारलौकिक विषयों के गहन, गूढ़सन्दर्भों को समझने में मेरी मदद की। मेरी चिन्तन शैली परिष्कृत होती गई।

सामाजिक परिवेश में व्याप्त विसंगतियों को देखकर, माथे पर चिन्ता की जो लकीरें, अनायास ही उग्र हो उठती थीं, वो " **अन्तर्नाद**" में समसामयिक व उतने ही शाश्वत चिंतन एवं वैचारिकी के रूप में परिलक्षित होती दिखेंगी। प्रसिद्ध साहित्यकार और कवयित्री श्रीमती इन्दिरा किसलय जी ने अपना आशीर्वाद देकर, **अन्तर्नाद** को हुंकार में परिवर्तित कर, अपनी सहमति दे दी। अंतरा शब्दशक्ति के प्रकाशन में, **अन्तर्नाद** भारतीय संस्कृति की गरिमा को, पुनःउच्च पद पर प्रतिष्ठापित करने का एक छोटा सा प्रयास है, जो पाठकों को यदि लेशमात्र भी सन्तुष्ट कर सका, तो गन्तव्य की ओर बढ़ना निश्चित हो जाएगा।

प्रथम काव्य संग्रह "**गीली माटी**" के उपरान्त, "**अन्तर्नाद**" में उठती हुई काव्य तरंगें पाठकों के स्नेहार्थ प्रस्तुत हैं।

- रंजना श्रीवास्तव

किरीट

सिन्दूरी स्वर्ण वर्ण नभ के आलोक में सुधियों के कंवल खिलते हैं। तरुपांतों से झाँकती सहस्रार किरणों का झरना, अस्तित्व को सम्पादित करता है। कनक किरणों में छिपा हुआ मौन, नाना ध्वनियों में रूपान्तरित होता हुआ, शनै: शनै: विराट सत्ता के ऐश्वर्य से पर्दा उठाता है। इसी तर्ज पर **रंजना** की कविताएँ, अंतश्चेतना के प्रकोष्ठ से निकलकर, कलम के होठों पर, मंत्र सी उच्चरित होती हैं। कुछ नैसर्गिक, कुछ अर्जित भावभूमि पर विस्तार पाती है संवेदना।

"कविता ही कवि का परम वक्तव्य होती है। "

अज्ञेय के अनुभूति लोक का ज़िक्र है यहाँ। **रंजना** के लिए यही कहना होगा कि उनकी सृजनशाला में पौराणिक ग्रन्थ माला के पुष्प हैं। हर पन्ने से, संस्कृति के पराग की खुशबू आती है। संस्कृत के अकूत वैभव की बानगी प्रस्तुत करती हुई वे जैसे अनजाने में चिन्तन का उत्स निवेदित कर जाती हैं।

अभिज्ञान शकुन्तलम्, गीता, उपनिषद्, भविष्यपुराण, नीतिशतक, चाणक्य नीति आदि के इतिवृत्त **रंजना** की लेखनी में यूँ समाए हैं, ज्यों हवा, सुरभि का भार, निर्भार दशा में वहन करती है। वे वैदिक वाङ्मय पर मुग्ध हैं, पर परिवेशगत विसंगतियों पर बेचैन भी। शिल्प की कसौटी पर शास्त्रीय आकर्षण सिद्ध करती हुई छांदस कविताएँ संस्कृतनिष्ठता के अलावा, यदा-कदा उर्दू के निकट हो जाती हैं।

अध्यात्म एवं दर्शन से उपजी प्रवृत्तियाँ काव्य की अंतर्धारा को संचालित करती हैं। इतिहास, सौंदर्य एवं पुरोगामी विचारधारा का सामञ्जस्य उनकी कविता को आभामण्डित करता है। शब्द सत्ता को किरीट पहनाती हुई **रंजना** चिन्तन के धरातल पर नूतन शैली को प्रतिष्ठित करना चाहती हैं। घोर अमूर्तन, जटिल बिम्ब विधान और मायावी प्रतीकों से स्वाभाविक दूरी बनाती हुई **कवयित्री** पाठकों की अंतश्चेतना को पुरस्कृत करेंगी, ऐसा विश्वास है।" अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन" का यह उपहार, कविता के ताजे मुहावरे के साथ है। “भारत

भूषण अग्रवाल" कहतेहैं-" **दीप, मेरा धर्म है**" ..... **रंजना** भी तो यही कहती हैं।

माघ पूर्णिमा (19/02/19)
शुभकामनाएँ
इंदिरा किसलय (लेखिका/कवयित्री)
मो० 9371023625 नागपुर – 27

सिसकी

छिपे काले चेहरे देखे,
उजले श्वेत परिधानों में।
सुर्खियों में रावण देखे,
चर्चित थे अखबारों में।

मोहिनी मुस्कान देखी,
कठोर दिल पाषाणों में।
चीर हरण होते देखा,
ऊँचे नामी दरबारों में।

रुँधे स्वर ने प्रार्थना की,
बाज़ों गिद्धों के पाशों में।
सिसक रही थी ज़िन्दगी,
कोयलिया की आहों में।

अनन्त कम्पन भर गया,
उखड़ी – उखड़ी साँसों में।
ख़ता किसकी सज़ा किसे,
प्रश्न छुपा था आँखों में।

परिवार की ढाल- मेरे पिता

कड़क ताप में जो बरगद की छाया है,
वो मेरे पिता के आशीर्वाद का साया है।
कठोरानुशासन ही जिनका सरमाया है,
नैतिक मूल्यों से सजी उनकी काया है।।

अनन्त गामिनी यादें अंतस दुखाती हैं,
यादों की मौन बोलियाँ सदा सताती हैं।
पिता तमस में ज्वलित एक मशाल है,
वही कष्टों में बने परिवार की ढाल है।

उनकी दुआ बिन सारा जहाँ वीरान है,
हर घर चलता-फिरता मात्र मकान है।
मेरी तक़दीर की तदबीर भी सँवारी है,
भावी स्वप्नों की तस्वीर भी निखारी है।

उंगली पकड़ चलना सिखाना याद है,
कठिन सबक सब जिन्दगी का याद है।
पिता के कंधे की सवारी में जो सुख है,
उनको कंधा देना उतना ही बड़ा दुःख है।

संघर्षों से जूझने की दोधारी तलवार है,
सीने पर सहते दुश्मन के सौ-सौ वार हैं।
उनके सपनों की धरती सदैव बंजर है,
परिवार के सामने भरा पूरा समन्दर है।

पिता से ही सुरक्षित पूरा घर परिवार है,
हर दुःख निवारण का वही आगार है।
पिता के परिश्रम से प्रति मुख आहार है,
नमन ऐसे पिता का हार्दिक आभार है।

जीना चाहती हूँ

भौतिक सुख में कैद नहीं मेरी कोई अभिलाषा,
आकर्षण व झूठी शान नहीं न है महत्वाकांक्षा।
रूह में उसकी गहरे तलक उतरना चाहती हूँ,
मैं जिंदगी को फिर एक बार जीना चाहती हूँ।

कच्चे प्यार के कच्चे धागों से जीवन उधड़ गया,
उधड़े-उधड़े कच्चे धागों से रंग भी निकल गया।
उधड़ी बखिया को फिर से सीना चाहती हूँ,
मैं जिंदगी को फिर एक बार जीना चाहती हूँ।

सुखशय्या की चाह नहीं नियति को हूँ मानती,
दु:खों में मजबूत खड़ी हूँ समय चक्र को जानती।
दु:ख का एहसास भी सुख के साथ चाहती हूँ,
मैं जिंदगी को फिर एक बार जीना चाहती हूँ।

नफरतों ने तोड़े न जाने कितने अपनों के घर,
छूट गए सारे रिश्ते बेगाना हुआ प्यार का सफर।
अब फिर से प्यार का वही मंजर चाहती हूँ,
मैं जिंदगी को फिर एक बार जीना चाहती हूँ।

क्लेश कलह और शोर है दुनिया में चहुँ ओर,
खुशियों के इन्तज़ार में भीगी नयनों की कोर।
खुशगवार हवा में श्वास प्रश्वास चाहती हूँ,
मैं जिंदगी को फिर एक बार जीना चाहती हूँ।

आत्म साक्षात्कार से आत्मबोध

कहोड़ ऋषि के अलौकिक सुपुत्र थे अष्टावक्र महान,
अष्टांग योग मातृगर्भ में सीखा ज्ञानी परब्रह्म विज्ञान।

विद्वज्जन को परास्त किया शास्त्रार्थ जनक दरबार,
तत्त्ववेत्ता व दूरदर्शी ने किया निज साक्षात्कार।
अचंभित हो वाक्चातुर्य से पैरों पर गिर गए जनक,
अष्टावक्र को गुरु मानकर विद्यार्थी बन गए जनक।

चक्षु खुले जनक के पूछें मुक्ति और वैराग्य आधार,
महाज्ञानी निर्लिप्त भाव से देते आत्मबोध का सार।
विषय वासना को त्यागें कपटी विष बेल की तरह,
क्षमा दया अस्तेय व्रत धारें अमृत रस पान की तरह।

कृत्रिम शान्ति कभी न पालें परित्यागें सभी विकार,
लाभ हानि से दूर हो सुनें चिरंतन आत्मा की पुकार।
साध्य और साधन से दूर दु:ख व सुख में निर्विकार,
रज तम से परे सत समाधि हो निर्लिप्त निर्विचार।

विराट विश्व भी अस्तित्व हीन है उपजा है जो काया,
शुद्ध आत्मा को पहचानो अस्तित्व जिसने पाया।
जन्म मरण के फेर में उलझे झूठी जिज्ञासु प्रवृत्ति,
मोक्ष प्राप्त कृतकृत्य होता जिसकी सात्विक बुद्धि।

जीवनोपयोगी सिद्धांत

मूर्खों प्रगल्भों से न कभी करो अनावश्यक विवाद,
अपनी खुद की कमजोरियों से न बढ़ाओ फसाद।

जो दोष मढ़े गलत-सही उनका कर दो निराकरण,

चेहरे पर चेहरा न लगाओ हटाओ सारे आवरण।
गलत साथ और गलत काज की बदनामी से डरो,
श्रम को अपना मित्र बनाओ आलस को परित्यागो।

जो नजर अंदाज करे वो नहीं विश्वास के काबिल,
समान स्तर के व्यक्ति होते हैं मित्रता के काबिल।
अतिमृदुभाषी से बचकर रहना जहर बुझी तलवार,
मित्र रूप में शत्रु होते जिनका खाली जाए नवार।

अज्ञानी आज कलिकाल में मंचासीन राज दरबार,
ज्ञानी सुन- सुन रोज मरें अनुत्तरित वाचालों की रार।
भूत भविष्य को छोड़कर लो वर्तमान का आनन्द,
लगाव की जंजीर को काटकर हो निर्लिप्त सानन्द।

सपनों का नीलाभ पटल

खूबसूरत सपने की आहट हुई नींद के आगोश में,
एहसास-ए-साज झंकृत हुआ आई जब होश में।

बंद आँखों के रस्ते ख्वाबों को स्वीकार किया मैंने,
किसी अपने की चाहत में नीलाभ पटल रचा मैंने।

उनींदी भीगी अँखियाँ गुलाबी सपने सजाती रहीं,
सपनों की दुनिया में मैं हँसती खिल-खिलाती रही।

अध खिली पंखुड़ियाँ भी चटक-चटक खिलती रहीं,
अनकहे जज़्बातों की हवा से खुशबू बिखरती रहीं।

जीवन के आखिरी पल तक हाथों में हाथ हो जाए,
अमावस्या की रात शायद चाँदनी रात हो जाए।

जो ख्वाब को हकीकत कर दे वो दुआ माँगती हूँ,
रेतीले मरुस्थल में बरसात की जिन्दगी माँगती हूँ।

पाप का घड़ा – कितना बड़ा

कहाँ से चले कहाँ के लिए, जो न सोंचा हो गया है,
मेरा देश शायद कहीं गलत राह में भटक गया है।

साक्षरता के नाम पर राजस्व को नित लूटने वालों,
दिन लद गए पाप का घड़ा लबालब भर गया है।
विदेशी फैशन की दुकान को देश में चलाने वाला,
अभद्रता की डाई बोकर भूमि बंजर कर गया है।

कुम्भ महाकुम्भ के नाम का बड़ा टेंडर पाने वाला,
देखो कच्ची नींव पर सपनों का महल बना रहा है।

भारत है सोने की चिड़िया तो सारा सोना कहाँ है,
काला धन भी विदेश यात्रा से श्वेत वर्ण हो गया है।

नर-नारी की स्पर्धा में पिस रहे निरीह बच्चे घर के
देर रात तलक घर का चूल्हा भी राह तक रहा है।

घर बनकर मकान फिर पाँच तारा होटल हो गया,
घर में बच्चे का स्वर नहीं नल टप-टप कर रहा है।

एक राजा रजवाड़े वाला देश कब से आज़ाद है,
घर में ही असुरक्षित नारी का दिल क्यूँ रो रहा है।

रजोगुण से प्रेरित अभिलाषा

सुख-शान्ति व समृद्धि की इच्छा मनुष्य स्वभाव,
धन व यश की प्राप्ति कर रखता श्रेष्ठत्व अहंभाव।

प्रत्येक कर्म अंतःकरण से होता सदा दिग्दर्शित,
सृष्टि लीला ईश्वर माया से प्रति पल रहती प्रेरित।

रज तम जन्मजात दोष से कर्मफल हैं वाञ्छित,
तीव्र अभिलाषा फल प्राप्ति की होती है अमर्यादित।

लोभी व्यक्तियों का कभी न हो सुखमय जीवन,
कष्ट परीक्षा सच्चे की सदा जो रहते दूर प्रलोभन।

जिस प्रक्रिया से होता है आत्मीय जनों को क्षोभ,
मद मत्सर या फिर हो लालच निंदित है वह लोभ।

काम क्रोध ईर्ष्या और अहंकार को लो नियम से जीत,
अभ्यास और वैराग्य को तुम बना लो अपना मीत।

माना इच्छाओं का सर्वथा त्याग होता है असंभव,
पर अनैतिक इच्छाओं का दमन तो होता है संभव।

दर्द का रुदन

बीते पलों की वही शहनाई फिर किसने छेड़ दी है,
अनगिनत पर्तों से दर्द की रुँधी आवाज़ आ रही है।
शहनाई की मन्द्र सप्तक की धुन ने नींद उड़ाई है,
मध्य और तार सप्तक ने हृदय में हल चल मचाई है।

स्मृति का आलोक वर्तमान की अग्नि बढ़ा रहा है,
दर्द-ए-दिल-ए-रौशन दान से धूम्र कृष्ण उठ रहा है।
दर्द की अविराम यात्रा संग आँसुओं की बरसात है,
जाने कितने दर्द का कितना अंश किसके पास है।

सत्य का खुरदुरा उथला सा धरातल आस-पास है,
क्यों उलझते हो ऊपरी सतह में यही भ्रमजाल है।
नितांत मौन छा गया है महफ़िल में कौन आया है,
शख्स छद्मवेश में वह अचानक रूबरू हो गया है।

छल प्रपंच करने वाले का चयन बाजार कर रहा है,
ईमान दारी का हाट पल-पल लुप्त होता जा रहा है।
सुना था अर्द्धत्व से पूर्णत्व के प्रति प्रवाह प्रगति है,
इतने प्रवाहों में सिर्फ मेरा ही अस्तित्व थम गया है।

जीते जी न सहायता न तारीफ़ में कसीदे पढ़ना है,
अमरत्व व प्रशंसा पाने के लिए अब मुझे मरना है।
अपनापन तो मृत्यूपरान्त ही उजागर होते देखा है,
वर्ना नफरत साथ लिए गिद्धों को मंडराते देखा है।

मौन की शक्ति का एहसास

ये मौन की शक्ति शब्दों की पहुँच से परे होती है,
नितान्त मौन होने पर मुझको मुझसे मिलवाती है।
ये है मौन की शक्ति,...

शांति ही सुषुप्त ध्वनि तरंगों को जागृत करवाती है,
विचारों की शक्ति व ऊर्जा का एहसास कराती है।
ये है मौन की शक्ति,...

मौन की स्थिति विवेक को सद्विचारों से भर देती है,
अन्तर्मन के सागर में विचारों से गोते लगवाती है।
ये है मौन की शक्ति,...

शान्ति ही योगी का योग और साधना कहलाती है,
ये उच्चतम मौनावस्था ईश्वर के निकट पहुँचाती है।
ये है मौन की शक्ति,...

मौन की शक्ति सनातन सत्य की खोज करवाती है,
वाचालता को दूर कर निज चरित्र मंथन करवाती है।
ये है मौन की शक्ति,...

मौन की गहरी तरंग अनन्त विचार प्रवाह जगाती है,
मौन से एकाकी अन्तरात्मा भाव शून्य हो जाती है।
ये है मौन की शक्ति,..।

रख लो न मेरा मान

आया फागुन जिया तरसे सजन घर आ भी जाओ,
सरसों फूले सुगंध लहके अबीर गुलाल लगाओ।
कोयल की कू-कू मधुर बौर लदीं आम की डालियाँ,
सतरंगी साज बजातीं झूमतीं गेहूँ की युवा बालियाँ।

बगीचों में महुआ कचनार फूले उनपर भंवरे झूले,
कृष्ण राधिका कदम्ब झूलें जाने तुम ही क्यों भूले।
दुष्यन्त भूले थे शकुन्तला व गौतम ऋषि अहिल्या,
उर्वशी भूली उरस्थ पुरुरवा को चित्त विरक्त किया।

तुम्हारी विस्मृति असह्य दाह बन ले लेगी मेरे प्राण,
मौसम में है प्रेम पनपता कामदेव न चलाओ बाण।
फगुनई मद्धम बयार बहे सजन डालो गल बहियाँ,
मिलाओ नटखट नैन जिन पर झूले ज़ुल्फ छइयाँ।

रक्तश्याम वर्ण सुभोर का आकाशीय प्रेम है रुहानी,
मिलो मुझसे इस तरह कि चंचल बयार बहे रुमानी।
द्वापर युग में कृष्ण अनुराग, त्रेता में जन नायक राम,
गोप गोपियाँ या केवट शबरी प्रेम दैवीय श्रेष्ठकाम।

मैंने तुम को अपना माना किया स्थापित उच्चस्थान,
विरक्त अन्तर्मुख न होऊँ मैं देखो रख लो मेरा मान।
यदि भगवान से किया होता प्रेम इस कदर अगाध,
सुख शय्या पर पा लेती ब्रह्म चिरन्तन आनंद निर्बाध।

हर आँसू सूख गया

मरीज-ए-दिल तो किसी की बातों से दो टूक हुआ,
तोड़ने वाले की अदा है वह जानकर भी मूक हुआ।

आँख भी रोई, दिल भी रोया, हर आँसू सूख गया,
बेदर्द हिचकियों से साँस गहराई हलक सूख गया।

बन्द एक मुद्दत से अपने ही ख्यालों में जिन्दगी है,
झूठी मुस्कान लिए बैठे हैं, दिखावे की जिन्दगी है।

देखते ही देखते संगी छूटे भीड़ में अकेला हो गया,
सारे जज़्बातों ने साथ छोड़ा एक सूनापन छा गया।

लाशों के ढेर पर बैठा गिन रहा सबक जिन्दगी के,
दो ग़ज़ जमीं के लिए चुका रहा उधार जिन्दगी के।

समय रहते अपने भीतर जगा न पाया एहसास को,
सूखे लबों से बुझा नहीं पाया अधूरी उस प्यास को।

अब बुतों की दुकान में वो बुत गिनता रह जाएगा,
अब की जो गया फिर बसन्त का मौसम न आएगा।

षोडश संस्कार – एक अनिवार्यता

षोडश संस्कार का नियनम उत्तम संस्कारी लालन,
उच्छृंखलता परित्यागें करें धीर गम्भीर परिपालन।

प्रथम संस्कार गर्भाधान ही उद्देश्य गृहस्थी पालन,
शुभ मुहूर्त शुभकाल में प्रसन्न चित्त सन्तानोत्पादन।
पुंसवन उत्तम पुत्रार्थ सीमंतोन्नयन से गर्भ संरक्षण,
प्रथम संपर्क है जातकर्म जीवन फलार्थ नामकरण।

तेजस्विता संग विनम्रता दर्शन सूर्य-चन्द्र निष्क्रमण,
रजत पात्र से अन्नप्राशन विधि हो शरीर चित्त घर्षण।
चूड़ाकर्म मुण्डन आत्मोन्नति हेतु विद्यारंभ प्रकरण,
कर्ण भेद यज्ञोपवीत से संयम संग देहव्याधिरक्षण।

वेदारम्भ से ब्रह्मचर्य व्रत गुरु सानिध्य व ज्ञानार्जन,
केशान्तकरण स्नातक उपाधि गृहस्थ प्रवेश प्रवर्तन।
वैदुष्य प्राप्त कर गुरु आश्रम से पितृ गृह समावर्तन,
परिपक्वता क्षमता वृद्धि के अनन्तर विवाह बन्धन।

अंत्येष्टि संस्कार है विधिवत अन्तिम कपाल करण,
बन्धन मुक्त देह नश्वर अनश्वर अमरात्मा का स्मरण।
दम्पत्ति का धर्म है अधिष्ठान युक्त संस्कारित संतान,
सम्बन्ध हों भावनात्मक आध्यात्मिक वैश्विक मान।

कस्तूरी की तलाश

अतीत की यादों व भविष्य के सपनों की कहानी,
वर्तमान के दु:ख की भगिनी दर्द तनाव की जननी।
प्रभुता और दिखावे की चाह में भटकाए मृगतृष्णा,
चंद्रिका के आँचल के छोर में छिपी है रात कृष्णा।

जो चाहा था पाया नहीं, पाया वही जो चाहा नहीं।
जो सोंचा वह मिला नहीं, मिला जो वह भाया नहीं।
जो खोया वह भूला नहीं, बचा जो है संभलता नहीं,
खोने-पाने की आपा-धापी में सही कुछ होता नहीं।

हिंदु-मुस्लिम, सिख-ईसाई सब मृग तृष्णा है प्रसरित,
आत्मा हैं हम प्रेम रस बाँटें देव सत्ता न हो शापित।
सर्वत्र मृग मरीचिका का भ्रमजाल आईना धुँधलाए,
स्व परम्परा सर्वोपरि न अन्य कथन मन भरमाए।

मरुस्थल में सूर्य किरण देती जल सर का आभास,
शरद पूर्णिमा की यामिनी चंद्र सौन्दर्य का एहसास।
गंध कस्तूरी है नाभि में वन मृग को तनिक न भान,
यत्र-तत्र ऐश्वर्य ढूँढता फिरे रहे खाली हाथ सुजान।

सूनी आँखों में बस गया कौन

तुम नहीं आए वादा करके मुकर गए बातों-बातों में,
तुम्हारा अनन्त इन्तज़ार बस गया है सूनी आँखों में।

जो ख्वाब देखे संग हमने हमारी ही कल्पनाओं में,
अधूरा सा वही ख्वाब बस गया है सूनी आँखों में।
तुम साथ होते तो रहती साथ के गर्म एहसासों में,
जाने कौन सा एहसास बस गया है सूनी आँखों में।

रहा मलाल तुम्हें पाने की हर नाकाम कोशिशों में,
अन्तिम नाकाम प्रयास बस गया है सूनी आँखों में।
फासले सिमटते गए हम बहकते गए जज़्बातों में,
वही कोमल सा जज़्बा बस गया है सूनी आँखों में।

बसन्ती बयार के स्पर्श का सुख बासन्ती मौसमों में,
प्यार का भीगा मौसम बस गया है सूनी आँखों में।
दिल को बहलाने को झूठ ही सही मेरे फसानों में,
मुख्तसर सा वो ख्वाब बस गया है सूनी आँखों में।

आँसुओं का दर्द से रिश्ता बना बिगड़ती बातों में,
लरजते दर्द का कम्पन बस गया है सूनी आँखों में।
तुम्हें चाहा तुम्हें पूजा तुम्हें बसाया अपनी साँसों में,
वो पहला-पहला प्यार बस गया है सूनी आँखों में।

मनोबल दूषित न होने दें

देखो न शरीर सौन्दर्य को विकास न होवे भौतिक,
उत्तम निष्ठावान बनो यदि सामर्थ्य नहीं शारीरिक।
मन हो पूर्ण नियंत्रित जब विकास मार्ग हो बौद्धिक,
बुद्धि का लोहा मनवाएँ जीवन क्रांति हो वैचारिक।

तन्मयता ध्यानस्थ एकाग्रता लक्ष्य करे संकल्पित,
विचार सशक्त झंझावात हैं सूक्ष्म जगत आकर्षित।
सकारात्मक सोंच यदि हो विचार शक्ति हो केंद्रित,
नकारात्मकता के दुष्प्रभाव से हो मनोबल दूषित।

सुदृढ़ मनोबल के लक्षण हैं धैर्य कर्मठता व दृढ़ता,
आवश्यक तन्मयता के संग कष्ट सहन की क्षमता।
इंद्रिय स्वामी गुणवान बनें त्यागें ईर्ष्या व चंचलता,
सफलता वैसी ही प्राप्त करें जैसी हो मानसिकता।

प्रयासरत रहें करें जागृत सुषुप्त शक्ति संभावित,
केंद्रीभूत हो जागृत होगी प्रचंड शक्ति मनोवांछित।
मन को अपना मित्र बनाएँ दिशा करें सुनियोजित,
जन्मे प्रवाह मंथन क्रांति हो जीवन पथ आलोकित।

नववर्ष-नवसंकल्प

2018 की विदाई के साथ, 2019 की अगवानी।
संवत्सर केवल बदल रहा है, तारीख वही पुरानी।

पाँव छुएँ आशीर्वाद लें, अब बंद करें मनमानी।
आओ घर को स्वर्ग बना दें, लौटा लाएँ रीत पुरानी।

संयमित होकर नव संकल्प लें, फिर करें अगवानी।
खुशियाँ बाँटें कसम लें पोंछ दें, आँख से बहता पानी।

अंधी दौड़ में शामिल न हों, वही राह चुनें स्वदेशी।
शुद्ध प्राकृतिक हवा में जी लें, फिर बन जाएँ देशी।

मुस्कराहट से मुस्कुराहट की, है वज़ह नई बनानी।
विचारों को केन्द्रित करके, प्रेम की ज्योत जगानी।

आज सयानी हो गई

कुछ फूलों को प्यार से सहलाकर हवा गुज़र गई,
मेरे मन की बगिया में यादों की बागवानी हो गई।
चाँद की लगन में रात चाँदनी की दीवाली हो गई,
चंचल चितवन चाँदनी-चाँद की दीवानी हो गई।

पाखी के पंखों से फिज़ा रूह-ए-आसमानी हो गई,
ऊँची उड़ान भरने में हवाओं की मेहरबानी हो गई।
लहरों पर होकर सवार एक कश्ती बेइंतहा बढ़ गई,
आशिकाना मिजाज़ में हर लहर की रवानी हो गई।

हस्त रेखाओं में मुझे कैद-ए-बामुशक्कत हो गई,
जीवन की हर घटना मुकद्दर की कहानी हो गई।
अंदर बाहर से ठोकरों से पल-पल कर सख्त हो गई,
मेरी हालत-ए-तूफान अब लफ्ज़-ए-बयानी हो गई।

ग़म-ए-अश्क बहाकर आँखें अब पनीली हो गईं,
बात तेरी चली थी महफ़िल में मेरी ज़ुबानी हो गई।
लड़ते सहते हर पल हर घटना एक सीख हो गई,
जिन्दगी बिन मकसद मानों आज सयानी हो गई।

विधि का विधान अटल

ढल जाएगा चढ़ता सूरज विधि का यही विधान है,
खाली हाथ जाने के लिए देखो जोड़ रहा इंसान है।
मौत से कौन छूटा अब तलक जी लो जी भरकर,
जो होना है होकर रहेगा नियति की डगर पर।

तुम क्या लाए थे जन्म के साथ जो तुमने खो दिया,
जो लिया यहीं रहकर लिया जो दिया यहीं दे दिया।
न कोई है अपना न है पराया मिथ्या है सब माया,
मैं और मेरा में उलझा रहा मन व माटी की काया।

रिश्ते सब छूट जाएँगे जब जान पे बन आएगी,
न कोई संग होगा खड़ा जब बात बिगड़ जाएगी।
झूठी शान-ओ-शौकत के जंजाल में खो जाएगा,
रुस्तम के धोखे से बार-बार सोहराब मारा जाएगा।

लाख पुत्र पौत्रों के बीच भी दशानन रहा अभागा,
विकल स्थिति में भी कुम्भकरण नींद से न जागा।
गुमान करते रहे सदा अपने जिस आशियाने पर,
शम्मा तक नहीं जलती अब उनके ही ठिकाने पर।

दीपावली – एक पारम्परिक दृष्टिकोण

हिन्दुओं के चार प्रमुख त्योहारों में, मन भावन लगती दीपावली।
खुशियों की लहर उमंग अंतस में, दीपों की आवली दीपावली।
स्वर्ण रजत कांस्य ताम्र धातु में, परिलक्षित हो धन त्रयोदशी,
दीन हीन या व्यापारी कुटुम्ब में, विकास गति है धन त्रयोदशी।

रौशनी करो हर कोने हर तमस में, दीप जलाओ नरक चतुर्दशी,
जीव जन्तुओं और कीट पतंगों में, जीवन भरती नरक चतुर्दशी।
कुबेर लक्ष्मी की पूजा विधि में, दीप जल उठे रात्रि कार्तिकी,
खिले चेहरों व फुलझड़ियों में, दूर अज्ञानतम रात्रि कार्तिकी।

ग्वाल बाल संग गोवर्धन पूजा में, परीवा को गिरि पूजें नर-नारी,
गंगा स्नान कर चिरैया गौर कथा में, करें अग्नि निवाला व्रत नारी।
भाई की दीर्घआयु के भाव में, भइया दूज मनाएँ भगिनी,
भटकटैया चुभा निज जिह्वा में, भ्राता के कष्ट हरें भगिनी।

आहिस्ता-आहिस्ता चल

ज़िन्दगी बता तू क्यों रफ़्तार से चलती जा रही है,
ज़रा आहिस्ता चल मुझको भी साथ लेकर चल।

रफ़्तार में तेरे चलने से सब अपने पीछे छूट रहे हैं,
ज़रा आहिस्ता चल अपनों को भी साथ लेकर चल।
सब अधूरा रहा सब बिखरता रहा भागा दौड़ी में,
ज़रा आहिस्ता चल संपूर्णता को साथ लेकर चल।

हम न यहाँ के रहे, न वहाँ के रहे, इस आपा धापी में,
ज़रा आहिस्ता चल मंजिल को साथ लेकर चल।
अधूरी रहीं मेरी चाहतें सारी पीछे छूटीं सब मन्नतें,
ज़रा आहिस्ता चल चाहतों को भी साथ लेकर चल।

दर्द बढ़ता जा रहा है दिन ब दिन दिल के टूटने से,
ज़रा आहिस्ता चल दिल को भी साथ लेकर चल।
रिश्ते पल – पल टूट रहे दिल के घाव रिसते जा रहे,
ज़रा आहिस्ता चल रिश्तों को भी साथ लेकर चल।

खोना और पाना तो बस एक मिथ्या मायाजाल है,
ज़रा आहिस्ता चल सच को भी साथ लेकर चल।
विचार कहते हैं जीवन एक उलझी हुई पहेली है,
ज़रा आहिस्ता चल अर्थ को भी साथ लेकर चल।

सच्चे दिल – सच्चे लोग

दिखावटी चमक दमक की झूठी दुनिया में,
बलि चढ़ जाते हैं आज जो दिल के सच्चे लोग।
कषाय कल्मष भाया नहीं पाप की संगत में,
झूठ की भीड़ में अकेले हो जाते हैं सच्चे लोग।

कण्ठ से निवाला उतरे नहीं पाप की कमाई में,
कंस वाली मथुरा में सुदामा से हैं सच्चे लोग।
कहें किससे कौन सुने मूक-बधिर पाखण्डों में,
वाचालों के ज्ञान से मौन हो जाते हैं सच्चे लोग।

सत्य की महिमा आज महज किताबी बातों में,
अदालतों में गीता के मोहताज हैं सच्चे लोग।
लड़ते लड़ते हौसला टूट रहा इस ज़माने में,
ख़ुदको वक्त के हाथों में छोड़ रहे हैं सच्चे लोग।

अकर्मण्य लगे रहे चिकनी चुपड़ी बातों में,
चतुराई सीख सके नहीं सच्चे दिल सच्चे लोग।
देश का बेड़ा गर्क हो रहा अयोग्य चुनावों में,
सर्वत्र लूट मची है प्रत्यक्षदर्शी हैं सच्चे लोग।

जीवन का गणित

दौड़ती भागती ज़िंदगी की रेस में थे भागीदार,
सपने सजाए आकांक्षाएँ पालीं पल पल हज़ार।

की जद्दोजहद छूटी ज़िन्दगी हाथों से बार-बार,
सबकी खुशी में दाँव पर लगाया अपना संसार।
जीवन गँवाया ख़ुद को मिटाया सबको पाने में,
न ये खुश हुआ न वो खुश हुआ इस ज़माने में।

उँगलियाँ मचलती रहीं छूने को पूरा आसमान,
समुद्र में ढूँढते रहे अपनी खुशियों का सामान।
नाम और यश क्या मिला करने लगे गुणगान।
तुच्छ सबको और माना ख़ुद को ख़ुदा महान।

अंतिम समय जब साँसें रुकने को बेताब हुईं।
दो ग़ज़ ज़मीन की ज़िन्दगी भी मोहताज हुई।
सत्य दृष्टिगोचर हुआ परम शक्ति कोई और है।
इस जीवन-नौका का खेवन हार कोई और है।

मेरी उत्पत्ति में रज़ा उसकी है मालिक है वह।
कतरा हूँ मेरे विचारों कर्मों का निर्माता है वह।
जीवन की गणित राशि का लेखाकार है वह।
जीवन मृत्यु चक्र वत चले तो चक्रधारी है वह।

कैकेयी – एक नयी परिकल्पना

स्वयंभू ईश्वर कृपा थी नियन्ता की सृष्टि थी कैकेयी,
विधि महान कार्य करवाना चाहे निमित्त थी कैकेयी।

काल गति और दैव द्वारा पूर्व नियोजित कैकेयी,
हानिलाभ जीवन मरण से निष्प्रभावित कैकेयी।
देवासुर संग्राम में रथ की धुरी बन जाती कैकेयी,
दशरथ का रथ युद्ध पर्यन्त सलामत रखती कैकेयी।

कवच पर सैकड़ों शूल बरसे जिसके वह कैकेयी,
शत्रुओं को धूल चटाती जो वीरांगना वह कैकेयी।
स्वयं अग्नि में जलकर जनकल्याण करती कैकेयी,
निज सुहाग को विस्मृत कर सुहाग दान देती कैकेयी।

वनवास का कलंक सिर माथे पर लेती कैकेयी,
कुल घातिनी बनकर उपेक्षा के तीर सहती कैकेयी।
राम थे आदर्श जननायक रूप आधार थी कैकेयी,
अपयश का हला-हल पी शिवत्व प्राप्त थी कैकेयी।

पुरुष के अहंवर्चस्व का भ्रम जाल तोड़ती कैकेयी,
स्त्री के अलग रूप को प्रतिध्वनित करती कैकेयी।
रघुकुल को प्रताड़ना से बचा निन्दा सहती कैकेयी,
नए प्रतिमान रच समाज की सोच बदलती कैकेयी।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती रंजना राजीव श्रीवास्तव
जन्म - 27 अक्टूबर (प्रयागराज)
शिक्षा - एम.ए., एल.टी., बी.एड.
निवास स्थान - सी.-1102 जयंती नगरी 5, बेसा, नागपुर, महाराष्ट्र - 440034
मो.नं. - 9096808191
मेल आई.डी. - srivastavaranjana9@gmail.com
कार्य - 2005 से वर्तमान तक भवन्स भगवान दास पुरोहित विद्या मंदिर, श्री कृष्ण नगर नागपुर में संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं प्राथमिक प्रभारी के पद पर कार्यरत।
प्रकाशन - कक्षा पाँचवी की पाठ्य पुस्तक में पाठ का प्रकाशन (सरल प्रकाशन महा.)
सम-सामयिक लेख 2011-12 (टाइम्स ऑफ इण्डिया)
लघुकथाएँ एवं कविताएँ (नवभारत 2017-18)
पूर्णा स्मारिका (विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन नागपुर 2018)
गीली माटी (काव्य संग्रह), शब्द सुगंध (स्मारिका), हाइकू मंथन (साझा)
चोका संग्रह (साझा-प्रकाशनाधीन)
सम्मान/पुरस्कार - मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा प्रशंसा पत्र - 2014-15
मास्टर ट्रेनर सम्मान - केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा
शब्द सुगंध सम्मान 2018
कवि सम्मेलन में महिला हिन्दी समिति द्वारा स्मृति चिन्ह व सम्मान।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-69-7
मूल्य- 60/-